Date - 18-05-2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. - Snehababli 1987@gmail.com
Cont. no. - 8409587640
Class - B.A. I (Hons.)

TOPIC - Refutation of Shankar's illusion.

Scanned with CamScanner

शंकर के मायावाद के खण्डन का मूल्यांकन

शंकर अपने 'माया-सिद्धान्त' के द्वारा ब्रह्म की पारमार्थिक सत्ता और जगत्-जीव प्रपञ्च के मध्य सामञ्जस्य स्थापित करने का प्रयास करते हैं। रामानुज ने शंकर के इस मायावाद या अविद्या-सिद्धान्त की आलोचना की है। रामानुज के अनुसार माया ब्रह्म की सत्य या वास्तविक शक्ति है जिससे वे इस सत्य सृष्टि का निर्माण करते हैं।

रामानुज शंकर के मायावाद के सात प्रमुख दोषों को बताते हैं जिन्हें 'सप्त-अनुपपत्ति' कहा जाता है। इन दोषों के कारण मायावाद असिद्ध है। ये सात दोष इस प्रकार हैं-

(1) आश्रयानुपपत्ति - रामानुज यह प्रश्न उठाते हैं कि आखिर माया का आश्रय क्या है? यदि यह कहा जाए कि माया का आश्रय ब्रह्म है तो फिर ब्रह्म का शुद्ध ज्ञान स्वरूप होने की अवधारणा खण्डित होने लगती है। साथ ही माया और ब्रह्म दोनों की सत्ता माननी पड़ेगी जिससे अद्वैतवाद पर आघात होगा। माया का आश्रय जीव को भी नहीं माना जा सकता है क्योंकि जीव स्वयं अविद्या जन्य है। स्पष्ट है कि अविद्या का आश्रय न तो ब्रह्म है और न जीव है। स्पष्ट है कि रामानुज के अनुसार अविद्या का कोई आश्रय नहीं है।

इस आक्षेप के प्रति उत्तर में शंकराचार्य के अनुयायियों का कहना है कि यद्यपि ब्रह्म ही माया या अविद्या का आधार है लेकिन वह स्वयं माया के प्रभावित नहीं होता। जिस प्रकार जादूगर अपनी मायावी शक्ति से स्वयं प्रभावित नहीं होता उसी प्रकार ब्रह्म भी अविद्या से प्रभावित नहीं होता।

Scanned with CamScanner

(2) तिरोधानानुपपत्ति – यदि ब्रह्म शुद्ध स्वप्रकाश ज्ञानस्वरूप है तो फिर अविद्या उसे कैसे तिरोहित या आच्छादित कर लेती है? अतः या तो ब्रह्म ज्ञानस्वरूप नहीं है या फिर अज्ञान उसे आच्छादित नहीं कर सकता।

शंकर के अनुयायियों का कहना है कि जिस प्रकार मेघ कुछ देर के लिये सूर्य को आच्छादित कर देता है उसी प्रकार ब्रह्म भी अज्ञान से ढक जाता है। परन्तु इससे ब्रह्म के मूल स्वरूप पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(3) स्वरूपानुपपत्ति – रामानुज का प्रश्न है कि अविद्या का स्वरूप क्या है? चार संभव स्वरूप है सत्, असत्, सदसत्, अनुभय (न सत् न असत्)। यदि यह सत् या भावरूप है तो फिर इसका अन्त नहीं हो सकता। यदि यह असत् है तो फिर जगत् प्रपंच का ब्रह्म पर आरोपण नहीं हो सकता। पुनः अविद्या को सदसत् रूप मानना आत्मविरोधी है क्योंकि सत् और असत्, प्रकाश एवं अंधकार के समान एक साथ नहीं रह सकते। इसे अनुभयात्मक मानना चिन्तन-प्रक्रिया से विमुख होना है। स्पष्ट है कि शंकर के माया के स्वरूप को बतलाया नहीं जा सकता।

अद्वैतवेदान्तियों के अनुसार माया भावरूप है। यहाँ माया को भावरूप कहने का तात्पर्य केवल इतना है कि वह अभावमात्र नहीं है। माया भावरूप होते हुए भी अपनी सत्ता के लिए ब्रह्म पर आश्रित है।

Scanned with CamScanner